दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य
(Hindi Literature)

टेस्ट–6

(द्वितीय प्रश्न-पत्र)

DTVF / OPT-23 **HL-2306**

निर्धारित समयः तीन घंटे
Time Allowed: Three Hours

अधिकतम अंक : 250
Maximum Marks : 250

नाम (Name): Payal Gyewalwanshi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 06 / 27 July 2023

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

0	8	4	5	8	1	7

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS**.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ______ टिप्पणी (Remarks): ______

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) दिनकर की कविता 'उर्वशी' का प्रतिपाद्य

रामधारी सिंह 'दिनकर' का प्रगतिवादी कविता की रचना में महत्वपूर्ण स्थान है। इनके द्वारा मुख्यतः सांस्कृतिक चेतना, देशप्रेम से संबंधित विषयों में लेखन किया गया है।

रामधारी सिंह दिनकर की प्रमुख कविताएँ - कुरुक्षेत्र
- उर्वशी
- रश्मिरथी

उर्वशी का प्रतिपाद्य

'उर्वशी' कविता मुख्यतः आध्यात्मिक कविता है। जिसमें नायक के रूप में पुरूरवा और नायिका के रूप में स्वयं

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उर्वशी है।

यह कविता मुख्यतः दो संस्कृतियों की टकराहट की प्रतीक बन गयी है।
यह एक मार्मिक प्रणय कथा है।

इसकी नायिका उर्वशी स्वर्गलोक की अप्सरा रहती है जिसे पुरुरवा से प्रेम हो जाता है। इनका प्रेम लोकनिरपेक्ष प्रेम रहता है।

पुरुरवा द्वारा कही गयी पंक्तिया, जो उसके प्रेम को प्रतिबिम्बित करती है :-

मर्त्य मानव की विजय का तूर्य हूँ मैं
उर्वशी। अपने समय का सूर्य हूँ मैं

इस प्रकार जहाँ दिनकर ने देशप्रेम पर ओजस्वी कविता लिखी है वहीं दूसरी ओर प्रेम गाथा भी लिखी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) इप्टा का परिचय और महत्त्व

भारतीय हिन्दी साहित्य में नाटक विधा का प्रारम्भ प्राचीनकाल से ही माना जाता है।

हिन्दी साहित्य के प्रमुख नाटककार
- भारतेंदु हरिश्चन्द्र - अन्धेर नगरी
- जयशंकर प्रसाद - स्कंदगुप्त
- मोहन राकेश - आषाढ़ का एक दिन

नाटक विधा के विकास में कई व्यक्तियों, संगठनों और संस्थाओं का योगदान है।

इप्टा (IPTA)

परिचय - Indian Peoples Theater Association.
(भारतीय जनता नाटक संघ)

स्थापना - वर्ष 1943 में

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्थापनाकर्ता - के.ए. अब्बास
डॉ. भाभा
अनिल दे सिल्वा
अली सरदार जाफरी

→ ब्रिटिश शासन के दौरान ही नाटक विधा के विकास हेतु यह सफल प्रयास किया गया था।

महत्व

1) आधुनिक नाटक की शुरुआत में सहायक
2) रंगमंचीयता के नए मानदण्ड स्थापित किया
3) नाटक विधा को साहित्य में उपयुक्त स्थान प्रदान किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) संस्मरण 'स्मृति की रेखाएँ'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संस्मरण विधा, साहित्य की महत्वपूर्ण गद्यात्मक विधा है। जिसमें मुख्यत: पुराने यादों या घटनाओं के स्मरण को ही लिखा जाता है।

स्मृति की रेखाएँ

'स्मृति की रेखाएँ' संस्मरण हिन्दी जगत की महान छायावादी कवियित्री महादेवी वर्मा की कृति है।

महत्व

1) इसमें उन्होंने अपनी स्मृति के आधार पर अमिट रेखाओं द्वारा अत्यंत सहृदयतापूर्वक जीवन के विविध रूपों को चित्रित कर पात्रों को अमर कर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दिया है।

२) इसमें उनके जीवन की महत्वपूर्ण मर्मस्पर्शी घटनाओं को संजोया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) संस्मरणकार कांतिकुमार जैन

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संस्मरणकार कांतिकुमार जैन का जन्म मध्यप्रदेश के सागर जिले में हुआ था। ये एक बहु-आयामी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति थे। जिनके द्वारा न केवल संस्मरण अपितु कहानी, उपन्यास आदि विधाओं में भी रचना की गई।

संस्मरण

कांतिकुमार जैन का प्रसिद्ध संस्मरण 'सुधा जीजी की याद में' है जो वसुधा पत्रिका के पहले अंक में छपा था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

→ इस संस्मरण ने इनकी ख्याति में तीव्र प्रगति की थी और उन्हें महान संस्मरणकार बनाया।

→ इस संस्मरण में उन्होंने अपनी बड़ी बहन संबंधी यादों को संवेदना के साथ उकेरा है। जो पाठक को जीवित कृति लगती है।

→ इसके पाठन के दौरान दृश्य आँखों के सामने तैरने लगते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) अज्ञेय की कहानियों का शिल्प

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' हिन्दी पद्य साहित्य के प्रयोगवादी कविता के महान रचनाकार हैं।

साथ ही गद्य साहित्य में मनोवैज्ञानिक कहानी धारा के महान कहानीकार हैं।

अज्ञेय की महत्वपूर्ण कहानियाँ

1) रोज/गैंग्रीन – रोज ऐसा होता है।

कहानी संग्रह – त्रिपथगा
– जयदोल

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कहानियों का शिल्प

1) कथानक टूटा हुआ

2) आदि मध्य अंत को कोई क्रम नहीं

3) प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग

4) चेतनाप्रवाह शैली, सूत्र भाषा शैली, पत्र शैली

5) पात्रों की संख्या कम

6) मुहावरों का प्रयोग

7) प्रतीकों और बिम्बों का प्रयोग अधिक

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) क्या भक्तिकाव्य को लोकजागरण का काव्य कहना उचित है? सुचिंतित विचार प्रस्तुत कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) पृथ्वीराजरासो के महाकाव्यत्व पर विचार कीजिये।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) समकालीन हिंदी उपन्यास में 'स्त्री-विमर्श' की उपस्थिति की पहचान कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समकालीन हिन्दी उपन्यास का प्रारम्भ स्वतंत्रता के पश्चात् माना जाता है।

साथ ही उपन्यास या अन्य विधाओं में स्त्री विमर्श को सही स्थान भी समकालीन उपन्यास में ही प्राप्त हुआ।

पूर्व में स्त्री विमर्श उपन्यास

प्रेमचंद - निर्मला

जयशंकर प्रसाद - आकाशदीप, अपसरा
तितली
इरावती

यशपाल - दिव्या

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

समकालीन हिन्दी उपन्यास में स्त्री विमर्श

प्रारम्भ में स्त्री के विषय पर उपन्यास लेखन पुरुष साहित्यकारों द्वारा ही किया गया। परन्तु वह संवेदना की गहराई नहीं छू सका। क्योंकि

> "संवेदना से बढ़कर स्वयंवेद्या होती है।"

इसी कारण उपन्यास लेखन में स्त्रियों ने स्त्री की सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक समस्याओं पर आधारित उपन्यास लेखन प्रारम्भ किया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

स्त्री पीड़ा चेतना से संबंधी उपन्यास

मृदुला गर्ग - कठगुलाब
चितकोबरा

प्रभा खेतान - छिन्नमस्ता

मैत्रेयी पुष्पा - इदन्नम

अन्य विषयों पर

गीतांजली श्री - तिरोहित

नासिरा शर्मा - शाल्मली

इस प्रकार समकालीन स्त्री रचनाकारों ने स्त्री विषय विचारों, चेतनाओं को साहित्य में स्थान प्रदान किया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

वर्तमान में भी कई उपन्यासकार महिलाएँ जैसे - चित्रा मुद्गल, मंजुल भगत, प्रभा खेतान के नाम प्रसिद्ध हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) भीष्म साहनी के उपन्यासों में निहित सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हिन्दी गद्य साहित्य की उपन्यास विधा में अंतर्गत विभिन्न विचारधाराओं पर आधारित उपन्यास लेखन आरम्भ हुआ।

उदाहरण -

मनोवैज्ञानिक उपन्यास - जैनेन्द्र
अज्ञेय
इलाचंद्र जोशी

सामाजिक चेतना आधारित उपन्यास
→ भीष्म साहनी
- भगवतीचरण शर्मा
- प्रेमचंद
- यशपाल
- नागार्जुन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भीष्म साहनी के उपन्यासों की सामाजिक चेतना

भीष्म साहनी का सबसे महान सामाजिक यथार्थ को प्रदर्शित करने वाला उपन्यास 'तमस' है।

तमस - आजादी के बाद विभाजन के परिणामस्वरूप बढ़ते सम्प्रदायवाद का वर्णन इस उपन्यास में सामाजिक यथार्थ का जीवंत चित्रण करता है।

अन्य प्रमुख उपन्यास

1) नीलू नीलिमा नीलोफर - स्त्री विषय उपन्यास

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2) मय्यादास की माड़ी

तीन पीढ़ीयों की सामाजिक सांस्कृतिक चेतना पर आधारित उपन्यास

3) कुन्तो (स्त्री चेतना पर आधारित उपन्यास)

4) कड़ियाँ - विपरित संस्कारों वाले पति-पत्नी के संबंध पर आधारित रचना।

इस प्रकार भीष्म साहनी द्वारा मुख्यतः सामाजिक विषयों जैसे - परिवार विघटन, सम्प्रदायिकता, स्त्री असमानता, जातिगत भेदभाव आदि पर लेखन किया गया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अकहानी आन्दोलन का परिचय देते हुए उसकी प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अकहानी आन्दोलन मुख्यतः समकालीन कहानी / साठोत्तरी कहानी का ही भाग है जिसका प्रारम्भ 1960 के दशक से होता है।

परिचय

अकहानी आन्दोलन मुख्यतः फ्रांस के एण्टी स्टोरी मूवमेण्ट से प्रेरित आन्दोलन था।

जिसका मुख्य उद्देश्य पारम्परिक कहानी लेखन का विरोध कर, एक नई विधा / रचनाशैली की स्थापना करना था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रमुख रचनाकार

दूधनाथ सिंह - प्रश्नचिन्ह
गंगा विमल प्रसाद - दीक्षा

प्रवृत्तियाँ

1) पारम्परिक नैतिक मूल्यों का तिरस्कार

2) स्त्री-पुरुष संबंधों की उन्मुक्तता

3) यौन चेतना संबंधी विषयों पर अधिक लेखन

4) सामाजिक मूल्यों से परे
जैसे- संयुक्त परिवार विच्छेदन
- तलाक, परपुरुष / परस्त्री संबंध

5) आधुनिक समस्याओं का यथार्थवादी चित्रण

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

शिल्पगत विशेषताएँ

1) कथानक का टूटना
2) शिल्प को कोई महत्व नहीं केवल बोधगम्यता को महत्व
3) प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग
4) पात्रों की संख्या कम
5) घटनाओं को महत्व
6) आदि-मध्य-अंत का ढांचागत कमजोरी)

इस प्रकार, नई कहानी आंदोलन समाज की निष्क्रियता, आजादी से मोहभंग, व्यक्तिवादिता, पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का ही परिणाम था)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) नई कहानी की सीमाएँ

नई कहानी आंदोलन की शुरुआत स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात होती है। (1950 के दशक में)

कारण - सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक परिस्थितियों में परिवर्तन
- बढ़ता शहरीकरण
→ अकेलापन, संत्रास, निरर्थकता बोध
- संयुक्त परिवार का टूटन
- स्त्री-पुरुष संबंध का विघटन

उपरोक्त कारणों से नई विचारधारा आधारित लेखन प्रारम्भ हुआ जिसे ही नई कहानी आंदोलन कहा गया)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सीमाएँ

1) भोगा हुआ यथार्थ के स्थान पर सोचा हुआ यथार्थ पर आधारित लेखन ने नई कहानी के उद्देश्य को कमजोर किया।

2) अत्यधिक यौन चेतना संबंधी विषयों पर लेखन किया गया जो सामाजिक ढांचे के विपरीत था।

3) सामाजिक समस्याओं से कटी हुई कहानी होने के कारण कम महत्व प्राप्त हुआ।

4) व्यक्तिकेन्द्रित, शहरी मध्यवर्ग द्वारा प्रारम्भ होने के कारण समावेशिता कम रही।

उपरोक्त कारणों से नई कहानी आंदोलन पूर्णतः सफल नहीं हुआ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) दिनकर की कविता में ओज

'रामधारी सिंह दिनकर' हिन्दी साहित्य की पद्य साहित्य में देशप्रेम संबंधी कविता लेखन में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किये हैं।

दिनकर की कविता में ओज

दिनकर की कविता में ओजगुण से सम्पन्न वीर रस की प्रधानता है।

→ भाषायी शब्दों में 'ट, ठ, ड, न, थ' ध्वनियों का अत्यधिक प्रयोग किया गया है।

→ इनके द्वारा अधिकांश रचनाएँ ओजगुण युक्त विषयों पर ही लिखी गई है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उदाहरण

1) **कुरुक्षेत्र** - महाभारत की कथा पर आधारित रचना। जिसमें अर्जुन रण अपने परिवार जन और युधिष्ठिर और भीष्मपितामह का संवाद है।

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती---
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला।
स्वतंत्रता पुकारती---

रश्मिरथी - रश्मिरथी में भी कर्ण पर आधारित कविता लिखी गई है जिसमें पाण्डव और कौरव युद्ध का वर्णन है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) 'परख' उपन्यास की 'कट्टो'

हिन्दी साहित्य के गद्य में उपन्यास द्वारा के मनोवैज्ञानिक और मनोविश्लेषण वादी उपन्यास रचना का प्रारम्भ हुआ जो मुख्यतः सिग्मण्ड फ्रॉयड के मनोविश्लेषण वाद से प्रभावित था।

साथ ही मार्क्स का अस्तित्ववादी दर्शन भी उपस्थित था।

'परख' उपन्यास

महान मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार **जैनेन्द्र** की रचना है।

जिसमें सभी पात्रों के चेतना की गहराई में बसे द्वन्द्व और

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विचारों को उकेरा गया है।

परख की कट्टो

परख में मुख्यत: ४ पात्र हैं - सत्यधन
बिहारी
कट्टो
गरिमा

→ कट्टो मुख्यत: नारी मनोविज्ञान को गहराई से प्रदर्शित करती है।

→ स्त्री की चेतना में उत्पन्न होने वाली स्त्री चेतना का मुखर प्रदर्शन है।

→ साथ ही समर्पण, सामंजस्य, संतुलन को भी दर्शाया गया है।

कट्टो द्वारा विषम परिस्थितियों से लड़ते हुए, सत्यधन के बाद बिहारी से भौतिक स्तर से उठकर आध्यात्मिक स्तर के प्रेम का निरूपण है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) विद्यापति की सौंदर्य-चेतना

विद्यापति मुख्यत: आदिकाल के साहित्यकार हैं। जिन्होंने कृष्ण और राधा विषयक रचना का प्रारंभ आदिकाल में किया।

परन्तु आचार्य शुक्ल द्वारा इनके साहित्य की प्रशंसा नहीं की गई है अपितु साहित्य का हिस्सा मानने से भी इंकार किया गया है।

विद्यापति की सौन्दर्य चेतना

विद्यापति ने मुख्यत: कृष्ण और राधा के शरीरी प्रेम पर लेखन किया है।

इन्होंने राधा को स्थान वयःसंधि बाला युवती रूप में रचना में शामिल किया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

राधा द्वारा कृष्ण के सौन्दर्य का वर्णन इस प्रकार है -

सखि से स्थायी अनुभव मोय
जो देखती बार-बार, नोय नोय नूतन होय।

विद्यापति ने मुख्यत: कृष्ण और राधा के सौन्दर्य का वर्णन किया है।

ऐ सखि देखल एक अपरूप
सुनइत मानवि सकल सरूप

इसी प्रकार राधा के सौन्दर्य का भी वर्णन अतिशयोक्ति पूर्ण है।

जहँ-जहँ पग धरई, तहँ-तहँ सरन्ह झरई

साथ ही, विद्यापति ने कृष्ण को भी विरह में दिखाया है जो पहला प्रयोग है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) हिंदी रंगमंच की विकास-यात्रा में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय का योगदान।

हिन्दी रंगमंच की विकास यात्रा प्राचीन काल से ही प्रारम्भ है परन्तु आधुनिक रंगमंच के विकास में कई नाटककारों और संस्थाओं का विशेष योगदान है।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (NSD)

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की स्थापना देश की राजधानी दिल्ली में की गई। और इसके साथ ही नाटक के क्षेत्र में स्नातक की शिक्षा का भी प्रारम्भ हुआ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

स्थापनाकर्ता - हबीब तनवीर
- इब्राहिम अल्काजी

मान्यता - संस्कृति एवं कला मंत्रालय के तहत
↓
साहित्य कला अकादमी द्वारा

योगदान

(1) युवा नाटककारों को मान्यता और प्रोत्साहन देने में
(2) नाटक साहित्य के विकास में
(3) रंगमंचीयता को एक मानक रूप देने में

वर्तमान में परेश रावल जैसे कलाकार इस संस्था के प्रबंधनकर्ता हैं

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'समानान्तर' कहानी-आन्दोलन का परिचय देते हुए हिन्दी कहानी को उसका अवदान बताइए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) हिंदी साहित्येतिहास-लेखन में आचार्य रामचंद्र शुक्ल की सीमाओं का विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की परम्परा का प्रारम्भ कुछ वर्णात्मक रूप से हुआ। जिसमें भक्तमाल (नाभादास), मिश्रबंधु विनोद (मिश्रबंधु) द मॉर्डन वर्नाक्यूलर लिटरेचर (गार्सिन) का महत्वपूर्ण योगदान था।

परन्तु औपचारिक और सही दिशा में प्रयास आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा किया गया। इसके बाद, श्यामसुंदर त्रिवेदी, रामस्वरूप चतुर्वेदी, बच्चन सिंह, गणपतिचंद्र गुप्त, रामकुमार शर्मा, रामविलास शर्मा का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

आचार्य रामचंद्र शुक्ल का योगदान

1) पश्चिमी साहित्यकार तेन की प्रत्यक्षवादी विचारधारा का पालन

2) समन्वयात्मक दृष्टिकोण

3) काल का वैज्ञानिक विभाजन

जैसे -

वीरगाथाकाल
भक्तिकाल
रीतिकाल
आधुनिकाल

"साहित्य, समाज के लोगों के चित्तवृत्तियों का प्रतीक है जैसे-जैसे ये परिवर्तित होगी, वैसे-वैसे ही साहित्य में भी परिवर्तन होगा।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रामचंद्र शुक्ल की सीमाएं

(1) सर्वप्रथम सिद्ध-नाथ साहित्य, जैन साहित्य को साम्प्रदायिक विचारधारा का सम्पोषण मात्र मानकर खारिज कर दिया।

परन्तु हजारीप्रसाद द्विवेदी ने कहा कि ऐसे में सारे भक्तिकाल को ही खारिज करना होगा।

(2) विद्यापति, जयदेव के रीतिकालीन और कृष्ण पर आधारित रचनाओं को अश्लील साहित्य कहकर खारिज किया।

- यदि ऐसा ही होता तो चैतन्य प्रभु जैसे महान कृष्ण भक्त इनके काव्य को सुनकर बेहोश न होते।
- मंदिरों में भजन के रूप में न गाया जाता। (हजारीप्रसाद)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(3) आदिकाल का नामकरण, वीरगाथाकाल एवं जिसका आधार (कुछ रासो काव्य) को माना।

जबकि अधिकांश रासो काव्य श्रृंगार आधारित है। साथ ही कई अप्राप्त है।

(4) भक्तिकाल के प्रारम्भ का कारण इस्लामी आक्रमण से हताश समाज के पास भक्ति के सिवाय कोई भी रास्ता न माना।

जबकि भक्ति का आगमन तो दक्षिण में रामानंद द्वारा हुआ था।

(5) रामचंद्र शुक्ल द्वारा ~~लक्षण~~ परम्परा को महत्व न देकर केवल पत्ययवादी विचारधारा का पालन किया गया।

(6) साथ ही कबीर को भी उतना महत्व नहीं दिया। उनकी भाषा को अबोधगम्य माना।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'आधे-अधूरे' नाटक की संवेदना पर प्रकाश डालिये। 15

'आधे-अधूरे' नाटक हिन्दी साहित्य के महान नाटककार मोहन राकेश की रचना है।

मोहन राकेश ने नाटक के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। साथ ही मौलिक रंगमंच का आविष्कार भी किया।

महत्वपूर्ण नाटक

आषाढ़ का एक दिन
आधे-अधूरे

प्रभाव

- सार्त्र के अस्तित्ववादी दर्शन
- सिगमन फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद
- अलबेयर कामू
- युंग

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

आधे-अधूरे नाटक की संवेदना

मोहन राकेश के आधे-अधूरे नाटक में महेन्द्रनाथ और उसकी पत्नी सावित्री के संबंधों का नाटकीकरण किया गया है।

संवेदना के पक्ष

(1) स्त्री पुरुष संबंध का विच्छेदन

(2) विचारों और पसंद में अंतर होने के कारण झगड़े और कलह होना।

(3) शहरीकरण के प्रभाव जैसे- रोजगार पाने में असमर्थता,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मँहगाई की मार।

(4) परिवार के वातावरण का भंग होना।

(5) स्त्री शिक्षा में प्रगति से स्त्री का आर्थिक सशक्तिकरण
- सावित्री द्वारा नौकरी करना

(6) पितृसत्तात्मक समाज की ओर महेन्द्रनाथ का घर में खाली बैठना।

उपरोक्त समस्याएं दोनों व्यक्तियों के जीवन के आधेपन, अधूरेपन, खालीपन को उजागर करता है।

अतः इस प्रकार इस नई दुनिया में सभी लोग इसी अधूरेपन से ग्रसित है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी की आंचलिक उपन्यासधारा पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्य की उपन्यास लेखन में आंचलिक उपन्यासधारा का महत्वपूर्ण स्थान है। फणीश्वरनाथ रेणु प्रवर्तक है।

विशेषताएँ

(1) भौगोलिक विशेषताओं को महत्वपूर्ण स्थान, साथ ही विस्तार से वर्णन।

उदा० - मैला आंचल में - पूर्णिया के मेरीगंज का वर्णन

(2) स्थानीय संस्कृति, उत्सवों, संगीत नृत्य कला का महत्वपूर्ण स्थान देना।

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उदा०. मैला आंचल में
जाट-जाटिन नृत्य
बिदापत संगीत

(3) स्थानीय लोक भाषा का प्रयोग, जो आंचल एक सीमित क्षेत्र में बोली जाती है।

उदा० - गमकै आ साबुन
- धमाधम
- मैंसन्च्यमन बाबू (वायमन्चैयरमैन) (मैला आंचल)

(4) अंचल (गाँव) को ही उपन्यास का नायक मानना।

उदाहरण - मैला आँचल में मेरीगंज गांव ही नायक है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(8) अंचल की समस्त समस्याओं का और सुन्दरता का यथार्थवादी चित्रण
यहाँ शूल भी है, धूल भी है, कीचड़ भी है और फूल भी है।
(मैला आँचल)

महत्वपूर्ण आंचलिक उपन्यासकार

1) फणीश्वरनाथ रेणु - मैला आँचल
- परती परीकथा

2) नागार्जुन - बटेसरनाथ

3) शिवपूजन सहाय - देहाती दुनिया

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) 'अंधेर नगरी' नाटक की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'अंधेर नगरी' नाटक
हिंदी साहित्य के नाटक विधा के महान नाटककार भारतेंदु हरिश्चंद्र का व्यंग्यात्मक नाटक है।

इस नाटक में मुख्यतः विवेकहीन और निरंकुश शासन व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया गया है।

मुख्यतः भारतेंदु हरिश्चन्द्र का काल ब्रिटिश राज का समय था जहाँ शोषणपरक, निरंकुश तानाशाही शासन व्यवस्था थी। राष्ट्रभक्ति और राजभक्ति का द्वंद्व था। इन्हीं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

परिस्थितियों के अनुरूप भारतेंदु द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से ब्रिटिश शासन व्यवस्था पर चोट की गई थी। और इसी ओर नई नाटक लिखे।

- भारत दुर्दशा
- वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति
- अंधेर नगरी

अंधेर नगरी नाटक की प्रासंगिकता

(1) विवेकहीन, निरंकुश राजनीतिक व्यवस्था पर व्यंग्य; वर्तमान में भी प्रासंगिक सिद्ध होता है।

उदा०- राजनीति के अपराधीकरण की दर में होती वृद्धि

- राजनीतिक नेताओं के शैक्षिक

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

स्तर का कम होना।

(2) स्पष्ट, पारदर्शी नियम-कानून व्यवस्था की अनुपस्थिति। वर्तमान में भी लोगों तक कानूनों की समझ की कमी है।

उदा० मॉब लिंचिंग, हिंसा जैसे अपराधों की वृद्धि

(3) भ्रष्ट नौकरशाही, कार्य के प्रति उदासीनता नाटक में प्रदर्शित है। यह समस्या वर्तमान में भी विद्यमान है जो नाटक को प्रासंगिक बनाती है।

उदा०- सार्वजनिक वितरण कार्यक्रम और मनरेगा जैसे कार्यक्रमों में भ्रष्टाचार

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(५) शिक्षा के स्तर के कम होने पर
कैसे अशिक्षित जनता, शासन के
विरुद्ध आवाज उठाने में अक्षम
होती है।

(६) शासन व्यवस्था में अराजकता का
माहौल, सभी दिशा में विकास को
अवरुद्ध करता है।

"अंधेर नगरी चौपट राजा
टके सेर भाजी टके सेर खाजा।"

यही समस्याएँ वर्तमान की
शासन व्यवस्था में भी विद्यमान है।
देश के कई ऐसे गाँव है जहाँ स्पष्ट
और पारदर्शी शासन की अनुपस्थिति
है जो 'अंधेर नगरी' की संज्ञा को
धारण करते है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'जनवादी कहानी' का परिचय दीजिये। 15

जनवादी कहानी का विकास
मुख्यत: 1935 के प्रगतिवादी लेखक
संघ की बैठक के उपरांत हुआ था।
जिसका अध्यक्षता प्रेमचंद द्वारा
की गई थी।

प्रमुख रचनाकार

1) यशपाल - दादा कामरेड
- देशद्रोही

2) नागार्जुन

3) राहुल सांकृत्यायन

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जनवादी कहानी की विशेषताएं

1) पश्चिमी दर्शन मार्क्सवाद से प्रभावित

2) समाज के शोषित वर्ग मुख्यतः किसान वर्ग और मजदूर वर्ग को शामिल किया गया।

3) सर्वहारा और बुर्जुआ वर्ग के संघर्ष को दिखाया गया है।

4) सामाजिक समस्याओं को लेखन का विषय माना गया

5) नारी वर्ग का सम्मान दिया गया। नारी सशक्तिकरण के प्रयास

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6) पूंजीवाद के स्थान पर समाजवाद की स्थापना का प्रयास।

शिल्पगत विशेषताएं

1) शिल्प को कम महत्व दिया गया

2) अभिधात्मक भाषा का प्रयोग जो समाज के कमजोर वर्ग तक बोधगम्य हो।

3) प्रतीकों और बिम्बों का कम प्रयोग

4) देशज और ग्रामीण भाषा का प्रयोग

इस प्रकार जनवादी कहानी मुख्यतः सर्वहारा वर्ग के समर्थन में प्रारम्भ किया गया आंदोलन था।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) महादेवी वर्मा की वेदनानुभूति पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

महादेवी वर्मा, साहित्य में अपनी वेदनानुभूति के लिये प्रसिद्ध रचनाकार है।

छायावादी कविता लेखन में महादेवी वर्मा का स्थान महत्वपूर्ण है।

वेदनानुभूति

1) इनके द्वारा मुख्यतः दुःख, पीड़ा आदि विषयों पर लेखन किया गया है।

समय का न नाम होना,
मैं विरह में चिर हूँ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(2) प्रकृति प्रेम, रहस्यवाद, आध्यात्मवाद आदि छायावादी विशेषताएँ इनके काव्य में स्पष्ट दिखाई देते हैं।

हाय जीवन की यही कथा रही,
जो नहीं कह सकी, जो सब कही।

(3) नारी विषयक मुद्दों को शामिल कर रचना की गई है।

कुछ आलोचकों ने इन पर आरोप लगाया है कि इनके द्वारा पलायनवादी विचारधारा को अपनाया गया है।

परन्तु गहराई में इन्होंने छायावादी विशेषताओं पर आधारित काव्य ही लिखा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Feedback

Questions .....

Model Answer & Answer Structure .....

Evaluation .....

Staff .....

Copyright – Drishti The Vision Foundation

रफ कार्य के लिये स्थान

(Space for Rough Work)

Copyright – Drishti The Vision Foundation